an>

Title: Need to provide financial assistance for setting up of camel milk based dairy farms in Rajasthan.

श्री पी.पी. चौधरी (पाली) ः मैं सरकार का ध्यान राजस्थान का "जहाज" कहे जाने वाले पशु ऊँट की ओर आकर्षित करते हुए बताना चाहूँगा कि ऊÃ¬टों कीसंख्या में निरंतर कमी हो रही है। ऊँट पालकों की माली हालत और राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों में रहने वाले ग्रामीणों की इन पर निर्भरता को ध्यान में रखते हुए राजस्थान सरकार ने ऊÃ¬ट को संरक्षित पशुओं की श्रेणी के साथ-साथ "राजकीय पशु" भी घोषित किया है। ऊÃ¬ट राजस्थान में सवारी व माल ढोलने के साथ-साथ सीमा सुरक्षा बलों के द्वारा सीमा की सुरक्षा हेतु गश्त लगाए जाने के काम में भी लिया जाता है। राजस्थान के बीकानेर जिले में राष्ट्रीय स्तर का अनुसंधान केंद्र भी स्थापित किया गया है जिसकी स्थिति पर पिछली सरकारों द्वारा ध्यान नहीं दिया गया।

ऊÃ¬टनी के दूध के औषधीय गुणों के बारे में यहां मौजूद सभी माननीय सदस्य जानते होंगे। इसके दूध में विटामिन "ई", विटामीन "सी" व प्रोटीन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है। ऊÃ¬टनी के दूध से मंद बुद्धि बच्चों के विकास की भी डॉक्टरों द्वारा पुष्टि की गई है। इसके अतिरिक्त रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने, मधुमेह, क्षय, डायबटीज, एनीमिया, पीलिया, दमा, तपेदिक, एलर्जी जैसी गंभीर बीमारियों के इलाज में भी इसका दूध लाभकारी सिद्ध होता है।

औषधीय गुण होने के कारण ऊÃ¬टनी के दूध की मांग देश और विदेश में बढ़ी है, लेकिन इसके दूध की "डेयरी व्यवस्था" नहीं होने के कारण इसका व्यवसायिक उपयोग नहीं हो पा रहा है। ऊÃ¬टनी की दूध बिना पाश्च्यूराइजेशन व बिना उबाले 9 से 10 घण्टे में रखा जा सकता है और यदि उसमें बराबर मात्रा में पानी मिला दिया जाए तो इसे 12 से 13 घण्टों तक सुरक्षित रखा जा सकता है। राजस्थान में लोकहित पशुपालक संस्थान द्वारा ऊÃ¬टनी के दूध का इस्तेमाल कर दो स्वादों की आईसक्रीम तैयार की गई है, जिसके माध्यम से ऊÃ¬ट पालकों को लाभ मिलने लगा है जिन ऊँट पालकों को इनके पालन से लाभ नहीं मिल पा रहा है, उन्हें मजबूरी में अपना ऊÃ¬ट कसाई को काटने के लिए बेचना पड़ रहा है।

अतः मेरा माननीय पशुपालन एवं डेयरी विकास मंत्री जी से आग्रह है कि ऊÃ¬टों का दूध संग्रहण करने हेतु राजस्थान के प्रत्येक जिले में अलग से डेयरी खोलने हेतु राज्य सरकार को वित्तीय सहायता देने की योजना बनाने की कृपा करें, ताकि लाखों की संख्या में ऊÃ¬ट पालकों को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जा सके।